लोकमत समाचार नागपुर, रविवार, 11 सितंबर 2016

ऐसे बचाएं बुजुर्गों को

साइबर-कवच

वरुण कपूर
अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक
एवं साइबर सिक्योरिटी विशेषज्ञ
varunkapoor170@gmail.com

यह देखने में आ रहा है कि वरिष्ठ नागरिकों पर साइबर अपराध का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है. खास तौर पर फिशिंग और विशिंग की कुटिल तकनीकों के माध्यम से उनसे व्यक्तिगत जानकारी हासिल करने और उसका साइबर अपराधों में इस्तेमाल करने की घटनाएं बढ़ रही हैं. यह साइबर अपराध एटीएम के जरिए, ऑनलाइन बैंकिंग के माध्यम से या अन्य वित्तीय धोखाधड़ी के रूप में हो सकते हैं. क्यों वरिष्ठ नागरिकों को इतनी बड़ी संख्या में निशाना बनाया जा रहा है? जवाब आसान है- साइबर अपराधी जो जानकारी हासिल करना चाहते हैं, उसे हासिल करने की संभावना और सफलता की दर यहां अधिक होती है. इसे वास्तविक दुनिया में भी देखा जा सकता है, नकली पुलिस का वेश बनाकर बुजुर्ग महिलाओं को अपराधी रास्ते में रोकते हैं और लुटेरों द्वारा गहने छीन लिए जाने का डर दिखाकर चालाकी से उनके जेवर उड़ा लेते हैं. यह लगभग रोज होता है. ऐसा क्यों होता है? क्यों वहां अपराधियों को ज्यादा सफलता मिलती है? समाधान खोजने के लिए इसका विस्तृत विश्लेषण किए जाने की जरूरत है.

पहली और सबसे जरूरी बात यह है कि हमारे देश में अथवा पूरी दुनिया में ही बुजुर्गों को सामान्य तकनीकी की और खासकर नवीनतम प्रौद्योगिकी की जानकारी कम ही होती है. वे शायद ही कभी उनसे लाभ हासिल करने की जद्दोजहद करते हैं और निश्चित रूप से इसकी बारीकियों तथा जटिलता के बारे में नहीं जानते. इस तथ्य का दुरुपयोग कर अपराधी उसका फायदा उठा लेते हैं. दूसरी बात, वरिष्ठ नागरिक आमतौर पर किसी की बातों पर आसानी से विश्वास कर लेते हैं. इस तरह समाज के अन्य वर्गों के मुकाबले उन्हें धोखा देना ज्यादा आसान हो जाता है. वे अपराधियों के लिए आसान लक्ष्य बन जाते हैं. तीसरा, वरिष्ठ नागरिक ठगे जाने के बावजूद काफी समय बाद इस बात को समझ पाते हैं कि वे ठगे गए हैं. चौथा, वे प्रतिक्रिया व्यक्त करने में भी बहुत समय लेते हैं जिससे अपराधी को पकड़े जाने से बचने का मौका मिल जाता है. यह बेशकीमती समय अपराधी को अपराध करके बच निकलने की योजनाएं बनाने का मौका दे देता है.

हमारे देश में अथवा पूरी दुनिया में ही बुजुर्गों को सामान्य तकनीकी की और खासकर नवीनतम प्रौद्योगिकी की जानकारी कम ही होती है. वे शायद ही कभी उनसे लाभ हासिल करने की जद्दोजहद करते हैं और निश्चित रूप से इसकी बारीकियों तथा जटिलता के बारे में नहीं जानते.

इसलिए वरिष्ठ नागरिकों को सतर्क रहना चाहिए और खतरों से अवगत रहना चाहिए. परिवार के सदस्यों द्वारा साइबर अपराधियों की कार्यप्रणाली और अपराधियों द्वारा पैदा किए जाने वाले खतरों के बारे में उन्हें बताना चाहिए. इसके लिए जरूरी है कि परिवार के सदस्य खुद भी आज की तकनीकी के प्रयोग और इसके खतरों के बारे में अवगत हों. समाज के सभी सदस्यों को साइबर जगत के खतरों के बारे में जानने का प्रयास करना चाहिए और सुरक्षा उपायों को अपनाना चाहिए. सिर्फ इसी तरीके से वे इस सर्वव्यापी खतरे से खुद भी बचे रह सकते हैं और अपने घर के बुजुर्गों को भी बचा सकते हैं.